Toppersnotes®
Unleash the topper in you

RAS

राजस्थान प्रशासनिक सेवा

राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC)

भाग – 11

समाजशास्त्र, प्रबंधन, लेखांकन, अंकेक्षण एवं प्रशासकीय नीतिशास्त्र

SIERRA INNOVATIONS

RAS

भाग-11

समाजशास्त्र

S.No.	Chapter Name	Page No.

1.	**भारत में समाजशास्त्रीय विचारों का विकास**
	• समाजशास्त्र
	• उपयोगिता
	• समाजशास्त्र की प्रकृति
	• समाजशास्त्री परिप्रेक्ष्य
	  ○ परिप्रेक्ष्य का अर्थ
	  ○ समाजशास्त्र का उद्‌भव व विकास
		1

2.	**भारतीय समाज में जाति एवं वर्ग**
	• जाति व्यवस्था
	  ○ जाति परिभाषाएँ
	  ○ भारत में जाति व्यवस्था की उत्पत्ति
	  ○ भारत में जाति व्यवस्था की उत्पत्ति से संबंधित सिद्धांत
	  ○ भारत में जाति व्यवस्था का महत्व और इसके बदलते परिदृश्य
	  ○ जाति की विशेषताएँ
	  ○ जाति प्रथा के गुण/कार्य
	  ○ जाति प्रथा के दोष/चुनोतियाँ
	• जाति प्रथा के कार्य एवं चुनोतियाँ
	  ○ जाति प्रथा की चुनोतियाँ/हानियाँ/अवगुण
	  ○ प्रभुजाति की अवधारणा
	• जजमानी प्रथा का अर्थ एवं परिभाषा
	• वर्ण तथा जाति में अन्तर
	• वर्ग व्यवस्था
	  ○ जाति और वर्ग में अंतर
	• जाति तथा प्रजाति में अंतर
		8

3.	**परिवर्तन की प्रक्रियाएंः– संस्कृतिकरण, पश्चिमीकरण** • संस्कृतिकरण की प्रक्रिया • संस्कृतिकरण की विशेषताएँ • संस्कार, राजनैतिक और आर्थिक शक्तियों का महत्त्व • संस्कृतिकरण के प्रोत्साहन के कारक • संस्कृतिकरण का आलोचनात्मक विश्लेषण • पश्चिमीकरण	20
4.	**धर्मनिरपेक्षता/लौकिकीकरण** • धर्म • भारत में धर्म–निरपेक्षता	29

	• धर्मनिरपेक्ष राज्य में राज्य की भूमिका • आधुनिक समय में धर्मनिरपेक्ष राज्य की आवश्यकता के कारण • भारतीय धर्मनिरपेक्षता की आलोचनाएँ • सहिष्णुता • धर्मपरिवर्तन • भूमंडलीकरण / वैश्वीकरण • सामाजिक प्रभाव	
5.	**भारतीय समाज के समक्ष चुनौतियाँ** • सामाजिक बुराईयों के कारण • सामाजिक समस्याओं का समाधान • भारत में सामाजिक चुनौतियाँ • बेरोजगारी • भ्रष्टाचार • बाल विवाह • मादक द्रव्य व्यसन • दहेज़ प्रथा • तलाक • कमजोर वर्ग : बुजर्ग, दलित और दिव्यांग	**42**
6.	**राजस्थान में जनजातीयाँ समुदाय : भील, मीणा, गरासिया** • जनजातियों की विशेषताएँ o राजस्थान की भील जनजाति o भीलों की वेशभूषा o भील जनजाति से संबंधित महत्त्वपूर्ण शब्दावली o मीणा जनजाति o आजीविका o सामाजिक जीवन o महत्त्वपूर्ण तथ्य o गरासिया जनजाति o प्रमुख विशिष्टताएँ o महत्त्वपूर्ण तथ्य o वेशभूषा एवं आभूषण o जनजातिय समुदाय की समस्याएँ o जनजाति विकास o जनजातिय सुरक्षा संबधी सैवंधानिक प्रावधान • कार्यक्रम • जनजाति के विकास हेतु कार्यरत संस्थाएँ व आयोग	**70**

प्रबंधन

S.No.	Chapter Name	Page No.
7.	**प्रबंधन – क्षेत्र, अवधारणा एवं कार्य** • विशेषताएँ एवं लक्षण • प्रकृति o प्रबन्ध बहु–विधा के रूप में o प्रबंध विज्ञान एवं कला के रूप में o प्रबन्ध कला के रूप में o प्रबंध पेशे के रूप मे o पेशेवर प्रबंध • प्रबंध के प्रमुख कार्य o नियोजन o संगठन o नियुक्तियाँ o निर्देशन o समन्वय o नियंत्रण o उत्प्रेरण • प्रबन्ध क्षेत्र • क्रियात्मक क्षेत्र o प्रबन्ध प्रक्रिया : विशेषताएँ • प्रबन्ध के कार्य • प्रबन्ध के सिद्धान्त एवं तकनीकें • नवीन प्रवृत्तियाँ o उददेश्यों द्वारा प्रबन्ध o अपवाद द्धारा प्रबन्ध • व्यूहरचनात्मक प्रबन्ध	**80**
8.	**विपणन** • विपणन की पुरानी विचारधारा • विपणन अवधारणा या विपणन की आधुनिक/नवीन/विस्तृत विचारधारा o आधुनिक विचारधारा की विशेषताएं • विपणन अवधारणा का दोष • विपणन के कार्य o वस्तु नियोजन एवं विकास o विक्रय o क्रय o परिवहन o संग्रह o मूल्य निर्धारण o पैकेजिंग o बाजार अनुसंधान o विज्ञापन • विपणन मिश्रण को प्रभावित करने वाले तत्त्व • विपणन मिश्रण के घटक • उत्पाद मिश्रण • मूल्य मिश्रण	**98**

	• वितरण मिश्रण • संवर्द्धन मिश्रण • विपणन मिश्रण का निर्माण	
9.	**धन का अधिकतमकरण** • लाभ का अधिकतमीकरण • धन के अधिकतमीकरण के उद्देश्य • वित्त के स्रोत, पूँजी संरचना एवं पूँजी की लागत o वित्त के स्त्रोत o स्थायी या दीर्घकालीन वित्त के स्रोत o साधारण एवं पूर्वाधिकार अंशों में अंतर • ऋण–पत्र • अर्जित आय का पुनः निवेश • विशिष्ट वित्तीय संस्थाएं • लीज/पटटे पर वित्त o अल्पकालीन वित्त के स्रोत • पूँजी ढांचा अथवा पूँजी संरचना o पूँजी संरचना को प्रभावित करने वाले तत्व/घटक • पूँजी की लागत o पूँजी की लागत की विशेषताएँ o पूँजी की लागत की अवधारणा का महत्त्व o पूँजी की लागत का वर्गीकरण o पूँजी की लागत की गणना • ऋण–पूँजी की लागत	**126**
10.	**नेतृत्व** • नेतृत्व की परिभाषाएं • नेतृत्व की प्रमुख विशेषताएं • नेतृत्व की शैली • क्रिस आर्गीरिस के अनुसार नेताओं में अन्तर • टेरी के अनुसार नेतृत्व के प्रकार o उपर्युक्त आधार पर नेतृत्व की शैलियां • नेतृत्व के कार्य • नेतृत्व की तकनीकें • नेतृत्व सम्बन्धी गुण • अभिप्रेरण अथवा प्रोत्साहन o अभिप्रेरण के उद्देश्य o अभिप्रेरण का महत्व o अभिप्रेरण के प्रकार o अभिप्रेरण को प्रभावित करने वाले घटक o अभिप्रेरण की विधियां व तकनीकें o अभिप्रेरण की आधुनिक विचारधाराएं • संचार o प्रशासन में संचार का महत्व o संचार के प्रकार o संचार के सिद्धान्त o संचार प्रक्रिया के अंग o प्रभावी संचार की विशेषताएं o संचार की बाधाएं	**146**

	• भर्ती o भर्ती के स्रोत • प्रेरण का अर्थ o कर्मचारियों को प्रेरित करना o प्रेरण कार्यक्रम में चरण o प्रेरण कार्यक्रम के लाभ o विशिष्ट प्रेरण कार्यक्रम • प्रशिक्षण o प्रशिक्षण के विशेषतायें o प्रशिक्षण एवं शिक्षा o प्रशिक्षण के उद्देश्य o प्रशिक्षण के क्षेत्र o प्रशिक्षण के सिद्धान्त o प्रशिक्षण के प्रकार o प्रशिक्षण की प्रक्रिया o निष्पादन मूल्यांकन के उद्देश्य o लाभ o दोष o निष्पादन मूल्यांकन की सीमाएं	
11.	**उद्यमिता (Entrepreneurship)** • उद्यमिता की अवधारणा • Incubation उद्भवन • स्टार्टअप • यूनिकॉर्न • उद्यमपूँजी • ऐंजल इन्वेस्टर	**194**
12.	**शैक्षिक प्रबंधन** • अत्यावश्यक सेवाओं का प्रबंधन • शिक्षा प्रबंधन • हेल्थकेयर एवं वैलनेस प्रबंधन	**201**

लेखांकन एवं अंकेक्षण

S.No.	Chapter Name	Page No.
13.	**वित्तीय विवरण** • वित्तीय विवरण–विश्लेषण का तात्पर्य • वित्तीय विवरणों के विश्लेषण का महत्त्व • वित्तीय विवरणों के विश्लेषण के उद्देश्य • वित्तीय विवरणों के विश्लेषण की तकनीकें o तुलनात्मक विवरण o समरूप और सामान्य आकार विवरण o प्रवृत्ति विश्लेषण o अनुपात विश्लेषण o रोकड़ प्रवाह विश्लेषण • कार्यशील पूँजी o कार्यशील पूँजी की अवधारणा एवं प्रबन्ध o कार्यशील पूँजी प्रबन्ध	**207**

	• कार्यशील पूँजी की आवश्यकता एवं महत्व • पर्याप्त कार्यशील पूँजी के लाभ • कार्यशील पूँजी के प्रकार अथवा वर्गीकरण • कार्यशील पूँजी को निर्धारित करने वाले तत्व • उत्तरदायित्व लेखांकन o इंस्टीट्यूट ऑफ कॉस्ट एन्ड वर्क्स एकाउंटेंट्स ऑफ इण्डिया o उत्तरदायित्व लेखांकन के महत्वपूर्ण लक्षण या मूलभूत पहलू o उत्तरदायित्व लेखा के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए कदम o उत्तरदायित्व लेखांकन के लाभ o उत्तरदायित्व केन्द्र के प्रकार • सामाजिक लेखांकन o सामाजिक लेखांकन की विशेषताएँ o सामाजिक लेखांकन की आवश्यकता/लाभ • विशेषताएँ • प्रकार • आंतरिक लेखा परीक्षा • बाहरी लेखा परीक्षा • वित्तीय लेखापरीक्षा	
14.	**अंकेक्षण** • अंकेक्षण के उद्देश्य o प्राथमिक उद्देश्य o द्वितीयक उद्देश्य o विशेष उद्देश्य • अंकेक्षण के लाभ • अंकेक्षण की सीमाएँ • आन्तरिक नियन्त्रण o एक अच्छी आन्तरिक नियंत्रण प्रणाली की विशेषताएँ o आन्तरिक नियन्त्रण प्रणाली के भाग o आंतरिक नियंत्रण के घटक o आंतरिक नियंत्रण की सीमाएँ o उद्देश्य o प्रकार • सामाजिक अंकेक्षण o महत्त्व o लाभ o सीमाएँ o भारत में सामाजिक लेखा परीक्षा • निष्पादन लेखा परीक्षा o निष्पादन लेखा परीक्षा का उद्देश्य • दक्षता लेखा परीक्षा/ कार्यकुशलता • दक्षता लेखा परीक्षा अपने दायरे में बहुत व्यापक है। o दक्षता के मापन के लिए पूर्व–आवश्यकताएँ o दक्षता लेखा परीक्षा का उद्देश्य o लाभ	**228**

15.	**बजट** • भारतीय बजट का इतिहास • बजट की विशेषताएँ • बजट के प्रकार • बजट निर्माण के विभिन्न सिद्धांत o वार्षिकी का सिद्धांत o विलय अथवा समाप्त हो जाने का नियम o राजकोषीय अनुशासन o समावेशिता o सटीकता o पारदर्शिता और उत्तरदायित्व o बजट के अन्य सिद्धांत • **बजटरी नियंत्रण** o उद्देश्य o नियंत्रण की प्रकिया o सफल बजटरी नियंत्रण प्रणाली की आवश्यक शर्ते o लाभ o सीमाएँ	**243**

प्रशासकीय नीतिशास्त्र

S.No.	Chapter Name	Page No.
16.	**नीतिशास्त्र एवं मानवीय मूल्य** • नीतिशास्त्र • नीतिशास्त्र के निर्धारक तत्व/ कारक • नैतिक मूल्यों के प्रभाव व परिणाम • नीतिशास्त्र के आयाम • महापुरूषों, समाज सुधारकों तथा प्रशासकों के जीवन से प्राप्त शिक्षा • मानव मूल्य • नैतिक मूल्य आत्मनिष्ठ हैं या वस्तुनिष्ठ	**251**
17.	**नैतिक समप्रत्यय** • ऋत की अवधारणा • ऋण की अवधारणा • संकल्प की स्वतंत्रता एवं नैतिक उत्तरदायित्व • दंड • सुख • आनन्द • अच्छाई/शुभ • उपयोगितावाद • आत्मपर्णवाद • कर्तव्य • बाध्यता • ऐच्छिक कर्म • अनैच्छिक या निरैच्छिक कार्य • सद्गुण	**278**
18.	**निजी एवं सार्वजनिक संबंधों में नीतिशास्त्र की भूमिका** • निजी संबंधों में नीतिशास्त्र • प्रशासकों का आचरण • सत्यनिष्ठता	**288**

	• नेतृत्व • अभिवृत्ति • सिविल सेवाओं हेतु बुनियादी मूल्य • सहिष्णुता (Tolerance) • परानुभूति/समानुभूति • कमजोर वर्गों के प्रति करूणा • प्रशासनिक सुधार आयोग (ARC) की सिफारिशें • प्रशासन में नैतिकता	
19.	**भगवद् गीता का नीतिशास्त्र एवं प्रशासन में इसकी भूमिका** • गीता का नैतिक दर्शन • निष्काम कर्मयोग • स्थितप्रज्ञ	**298**
20.	**महात्मा गांधी का नीतिशास्त्र** • गांधी जी के दार्शनिक विचार और उनका योगदान • गांधी जी के राजनीतिक विचार और उनका योगदान • गाँधी जी के सामाजिक संस्कृति विचार और योगदान • गाँधी जी के आर्थिक विचार एवं उनका योगदान • गाँधी जी के नैतिक विचार एंव योगदान	**301**
21.	**भारत एवं विश्व के नैतिक चिंतकों एवं दार्शनिकों का योगदान** • सुकरात • जीन रूसो • प्लेटो • जॉन स्टुअर्ट मिल • कान्ट • भारतीय दार्शनिक परम्परा	**309**
22.	**तनाव प्रबंधन** • तनाव • तनाव के प्रभाव • तनाव के कारण • उच्च तनाव के लक्षण • तनाव प्रबंधन	**328**
23.	**संवेगात्मक बुद्धि** • संवेगात्मक बुद्धि की संकल्पना • गोलमैन का विचार • दलीप सिंह (2003) • मुख्य परिभाषाएं • संवेगात्मक बुद्धि के प्रतिमान • संवेगात्मक बुद्धि के उपयोग • उच्च संवेगात्मक समझ रखने वालों की विशेषताएं • संवेगात्मक बुद्धि का प्रशासन में उपयोग	**333**
24.	**केस स्टडी** • केस स्टडी के उद्देश्य • केस स्टडी की विशेषताएं • केस स्टडी की उपयोगिता • केस स्टडी के उदहारण	**340**

1 CHAPTER भारत में समाजशास्त्रीय विचारों का विकास

समाजशास्त्र

- **ऑगस्त कॉम्टे** वह पहले विद्वान थे, जिन्होंने **मानवीय अन्तर्सम्बंधों के विज्ञान के संदर्भ में** 'समाज विज्ञान' शब्द का प्रयोग किया।
- **'समाज विज्ञान'** यह शब्द लैटिन शब्द **'सोसियस' (अतसंबंध)** एवं ग्रीक शब्द **'लोगस' (सिद्धान्त)** से मिल कर बना है
- **जो** मानवीय अन्तर्संबंधों से बने समाज के विज्ञान या सिद्धान्तों को व्यक्त करता है।
- **हर्बर्ट स्पेंसर** ने समाज के **क्रमबद्ध अध्ययन** का विकास किया और खुलकर **समाजशास्त्र शब्द** का प्रयोग किया।
- सरल शब्दों में कहें तो **समाजशास्त्र व्यक्तियों को अध्ययन** करने का एक तरीका है।
- यह सामाजिक **संबंधों, संस्थाओं और समूहों का वैज्ञानिक** अध्ययन है।
- **ऑगस्त कॉम्टे** ने समाज विज्ञान को परिभाषित करने की **समस्या के समाधान के रूप में इसे एक विधी विरोध** के रूप में लिया है और इसकी प्रकृति की रूपरेखा प्रस्तुत की।
- **हॉबहाउस** ने समझाया कि कैसे समाजशास्त्र "मानवीय मस्तिष्कों की अन्योन्य क्रियाओं" का अध्ययन है?
- **पार्क एवं बर्गस** "समाजशास्त्र **सामूहिक व्यवहार का विज्ञान** है"।
- **एमाइल दुर्खिम** ने "समाजशास्त्र /सामाजिक प्रक्रमों का अध्ययन कहा है।"
- **टी.बी. बाटोमोर के अनुसार** – हजारों वर्षों से लोगों ने उन समाजों व समूहों का अवलोकन और चिन्तन किया है, जिसमें वे रहते हैं, फिर भी समाजशास्त्र एक आधुनिक विज्ञान है और एक शताब्दी से अधिक पुराना नहीं है।

उपयोगिता

- विशेष तौर पर भारत जैसे विविधतावादी देशों में इसकी उपयोगिता और भी बढ़ जाती है।
- भारतीय समाज में प्रत्येक स्तर पर विभिन्नता देखी जा सकती हैं एक ओर धार्मिक–आर्थिक विषमताएँ हैं तो दूसरी तरफ परम्परावादी मूल्यों से हमारा नाता अभी बना हुआ है।
- शहरी समुदायों में आधुनिकता के मूल्य भी विद्यमान है।
- भारतीय समाज में व्याप्त परम्परा व आधुनिकता का मिश्रण भारत में भूमिका संघर्ष (Role Conflicts) की स्थिति पैदा करता है।
- इसके अतिरिक्त भारतीय समाज अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना भी कर रहा है।
  - जातिवाद (Casteism)
  - सामाजिक असमानता (Social inequality)
  - स्त्रियों की गिरती स्थिति (Deterriorating condition of women)
- इनको समझने के लिए हमें अपने समाज को समझना होगा।
  - इस तरह समस्याओं के निराकरण के क्षेत्र में यह हमारी सहायता कर सकता है।
- भारतीय परिप्रेक्ष्य में, भिक्षावृत्ति, वेश्यावृत्ति, बाल अपराध, ग्रामीणों की समस्याओं के सामाजिक कारणों को खोज कर इनकी निष्पक्ष व्याख्या की जा सकती है।
  - इसी प्रकार भारत की राष्ट्रीय एकता में बाधक तत्वों को समाप्त करके एकता को बनाए रखा जा सकता है।
  - सम्पन्न व गौरवमयी परम्पराओं को बनाए रखकर सांस्कृतिक पहचान की रक्षा की जा सकती है।
- वर्तमान परिस्थितियों के विश्लेषण के आधार पर नवीन परिस्थितियों के प्रति अभियोजन क्षमता की वृद्धि होती है।
  - इसके साथ–साथ समाजशास्त्र का अध्ययन ग्रामीण समाज के विकास में बाधाओं को समझने में सहायक है, जनजातियों की समस्याओं को समझने में उपयोगी है।
  - परिवार नियोजन सम्बन्धी समस्याओं को समझने में उपयोगी है।
- हालाँकि उपर्युक्त वर्णित समस्याओं के राजनीतिक, आर्थिक व मनोवैज्ञानिक पहलू भी हैं, परन्तु समाजशास्त्रीय पहलू की उपेक्षा से ये समस्याएँ पूर्णतः कब्जे में नहीं आ पाएँगी।

समाजशास्त्र की प्रकृति

- समाजशात्र की प्रकति के रूप में यह देखा जाता है कि समाजशास्त्र कला है या विज्ञान।
- यदि विज्ञान है तो विशुद्ध भौतिक विज्ञान है या आंशिक विज्ञान।
- कुछ विद्वान वैज्ञानिक मानते हैं तथा कुछ वैज्ञानिक नहीं मानते ।
- विज्ञान के मानदण्डों पर समाजशास्त्र को नापने के लिए विज्ञान की विशेषता पर एक नजर डालना जरूरी है।

समाजशास्त्र की वैज्ञानिक प्रकृति

- समाजशास्त्र के जनक **आगस्ट काम्टे सहित, इमाईल दुर्खिम, मेक्सवेबर** इत्यादि विद्वानों ने समाजशास्त्र को आरम्भ से ही विज्ञान माना है।
- हम निम्न आधार पर समाजशास्त्र को विज्ञान मानते हैं
  - वैज्ञानिक पद्धति का प्रयोग
  - वस्तुनिष्ठ अध्ययन
  - सत्यापनीय
  - निश्चितता
  - कार्य-कारण सम्बन्धों की स्थापना
  - सामान्यीकरण करना
  - पूर्वानुमान लगाना
  - आनुभाविक अध्ययन
  - सार्वभौमिकता
- समाजशास्त्र एक सामाजिक विज्ञान है और इस कारण इसकी अपनी सीमाएँ (Limitations) है
- प्राकृतिक विज्ञानों की विषय सामग्री विवेकशील नहीं होती है किन्तु समाजशास्त्र की विषय सामग्री मनुष्य होते हैं जो कि अपने व्यवहार में परिवर्तन ला सकते हैं
- अतः समाजशास्त्र में **सत्यापनीयता व पूर्वानुमान लगाना** प्राकृतिक विज्ञानों से अधिक कठिन होता है।
- इसी प्रकार प्राकृतिक वैज्ञानिकों का अपनी अध्ययन सामग्री से किसी प्रकार का अपनापन, प्यार, मोह, ईष्या, द्वेष, लगाव या नफरत इत्यादि नहीं होता है।
- किन्तु एक समाजशास्त्री अपने जैसे दूसरे मनुष्यों का अध्ययन करता है तो उसके मन में पूर्वधारणा हो सकती है जो उसके अध्ययन को प्रभावित कर सकती है
- ऐसी स्थिति में समाजशास्त्र में वस्तुनिष्ठ अध्ययन करना प्राकृतिक विज्ञानों में अधिक कठिन है।
- अतः हमें यह ध्यान रखना होगा कि **समाजशास्त्र समाज विज्ञान है, प्राकृतिक विज्ञान नहीं है।**

समाजशास्त्र प्राकृतिक विज्ञान क्यों नहीं

1. वस्तुनिष्ठता का अभाव-
2. सामाजिक घटनाओं की परिवर्तनशीलता तथा जटिलता-
3. सामाजिक घटनाओं तथा तथ्यों की माप में कठिनाई-
4. समाजशास्त्र में प्रयोगशाला का अभाव-
5. समाजशास्त्रीय अध्ययनों में सर्वाभौमिकता का अभाव-
6. समाजशास्त्र भविष्यवाणी करने में समर्थ नहीं है-

समाजशास्त्र की वास्तविक प्रकृति

1. समाजशास्त्र एक सामाजिक विज्ञान है, न कि प्राकतिक-

- चँकि समाजशास्त्र. प्राकतिक एंव भौतिक घटनाओं का अध्ययन नहीं करता है अतः इसे प्राकृतिक विज्ञान की श्रेणी में नहीं रखा जाता है।
- समाजशास्त्र एक सामाजिक विज्ञान इसलिए है क्योंकि इसमें सामाजिक घटनाओं, सामाजिक सम्बन्धों, सामाजिक समूहों, सामाजिक **प्रक्रियाओं एवं सामाजिक समस्याओं** का ही अध्ययन किया जाता है।

2. **समाजशास्त्र वास्तविक अथवा प्रत्यक्षवादी विज्ञान है न कि आदर्शात्मक**-
   - समाजशास्त्र मे पक्षपात-रहित होकर केवल उन्हीं सामाजिक घटनाओं का अध्ययन किया जाता है जिन्हें प्रत्यक्ष रूप से देखा जा सकता है।
   - समाजशास्त्र 'क्या है' का अध्ययन करता है 'क्या होना चाहिए' का नहीं
   - यह सामाजिक घटनाओं को अच्छा-बुरा या सही-गलत नहीं कहता है और न ही आर्दशवादी बातें करता है बल्कि सामाजिक घटनाओं के प्रति तटस्थ रहता है।
   - सामाजिक घटनाएँ जैसी हैं उन्हें उसी रूप में देखता है एवं प्रस्तुत करता है।
3. **समाजशास्त्र एक विशुद्ध विज्ञान है, व्यवहारिक विज्ञान नहीं है-**
   - समाजशास्त्र एक विशद्ध विज्ञान है इसीलिए यह सामाजिक घटनाओं का अध्ययन करता है एवं उनका वास्तविक ज्ञान प्राप्त करके सिद्धान्त प्रस्तुत करता है। किन्तु इस ज्ञान को या सिद्धान्तों को वह प्रयोग में नहीं लाता है।
   - समाजशास्त्र केवल सिद्धान्त बनाता है इन सिद्धान्तों का व्यवहार में उपयोग अन्य शास्त्र जैसे सामाजिक कार्य, अर्थशास्त्र, राजनीतिशास्त्र आदि करते हैं।
4. **समाजशास्त्र एक अमूर्त विज्ञान है, मूर्त विज्ञान नहीं है**-
   - समाजशास्त्र सामाजिक सम्बन्धों तथा सामाजिक प्रक्रियाओं का अध्ययन करता है जो दिखाई नहीं देते हैं अर्थात जिनकी प्रकृति अमूर्त है। इसीलिए समाजशास्त्र को अमूर्त विज्ञान कहते है।
   - यह भौतिक वस्तुओं अथवा मूर्त चीजें जो दिखाई देती है का अध्ययन नहीं करता है जैसे जीवन जन्तु, पेड़-पौधे, कुर्सी-मेज व्यक्ति आदि।
5. **समाजशास्त्र एक सामान्य विज्ञान है न कि विशेष विज्ञान-**
   - समाजशास्त्र समाज की सभी घटनाओं का अध्ययन सामान्य रूप से करता है।
   - समाजशास्त्र उन सामान्य नियमों का अध्ययन करता है जो विभिन्न सामाजिक घटनाओं से सम्बन्धित होते हैं।
   - अर्थशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, इतिहास अथवा भूगोल की तरह कि विशेष घटना, व्यक्ति अथवा कारक के अध्ययन में ही रूचि नहीं लेता है।
6. **समाजशास्त्र एक तार्किक तथा अनुभवसिद्ध विज्ञान है-**
   - समाजशास्त्र द्वारा किए जाने वाले अध्ययन तर्क पर एवं अनुभव पर आधारित होते हैं अर्थात यह कार्य क्षेत्र में जाकर प्राथमिक रूप से प्राप्त तथ्यों का अध्ययन करता है
   - उदाहरण के लिए महिला शिक्षा की वास्तविकता जानने के लिए जब हम स्वयं महिलाओं से मिलकर उनसे सूचनाएँ प्राप्त करते हैं तो इन सूचनाओं को ही अनुभवसिद्ध तथ्य कहते है। साथ ही ये तथ्य तार्किक भी होते है।

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि समाजशास्त्र एक प्रत्यक्षवादी, विशुद्ध, अमूर्त, सामान्य, तार्किक तथा अनुभवसिद्ध विज्ञान है।

समाजशास्त्री परिप्रेक्ष्य

परिप्रेक्ष्य का अर्थ

- किसी भी विषय के अध्ययन में एक विशेष पक्ष या पहलू या दृष्टिकोण को लेकर चला जाता है।
  - यह विशेष दृष्टिकोणीय झुकाव (Ideological Orientation) परिप्रेक्ष्य कहलाता है।
- किसी वस्तु के अनेक पक्ष हो सकते हैं तथा उसके पक्ष विशेष का अध्ययन अनुशासनों से किया जाता है।

समाजशास्त्र का उद्भव व विकास

- कुछ ऐसी सामाजिक स्थितियाँ जिन्हें समाजशास्त्र के उद्भव के लिए जिम्मेदार माना जाता है, निम्न है:-
- यूरोप में वाणिज्यिक क्रान्ति
  - पुर्तगाल, इंग्लैण्ड, हालैण्ड और स्पेन जैसे देशों में एशिया के देशों से व्यापार को बढ़ाने की होड़ शुरू
  - भारत और अमेरिका जैसे देशों की खोज हुई।
  - इससे यूरोप का व्यापार एक वैश्विक व्यापार में बदलने लगा।
  - कागज की मुद्रा का विकास हुआ।

- बैकिंग व्यवस्था का विकास हुआ,
- मध्यमवर्ग का उदय हुआ,
- मध्यकालीन यूरोप में पुनर्जागरण (Renaissance) हुआ
- इसे वैज्ञानिक क्रान्ति की शुरूआत माना जाता है,
- चिकित्सा के क्षेत्र में मानव शरीर विच्छेदन को स्वीकार किया गया, रसायन शास्त्र, भौतिक शास्त्र, गणित व खगोल विज्ञान इत्यादि का विकास हुआ।

- **फ्रांसीसी क्रान्ति(1789)**
  - इस क्रान्ति द्वारा स्वतन्त्रता, समानता एवं बंधुत्व का विचार उभर कर सामने आया,
  - लोग अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हो गये।
  - क्रान्ति द्वारा व्यवस्था बदल गई व लोकतन्त्र की स्थापना हुई।
  - फ्रांसीसी क्रान्ति में मान्टेस्क्यु (Montesquieu) वाल्टेयर (Voltaire) व रूसो (Rousseau) जैसे दार्शनिक विचारकों के विचारों का महत्वपूर्ण योगदान माना जाता है,
  - इनके विचारों से तार्किकता का विकास हुआ।

- **औद्योगिक क्रान्ति**
  - अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध व उन्नीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध में यूरोप के कुछ देशों की तकनीक और सामाजिक-सांस्कृतिक व आर्थिक स्थितियों में बड़ा बदलाव आया।
  - औद्योगिक क्रान्ति की शुरूआत इंग्लैण्ड से मानी जाती है।
  - इस क्रान्ति ने यूरोप व अन्य देशों के नागरिकों के सामाजिक व आर्थिक जीवन में अनेक बदलाव किये।
  - उद्योगों का मशीनीकरण हुआ,
  - उत्पादन में अत्यधिक वृद्धि हुई,
  - पूँजीवाद का विकास हुआ,
  - औद्योगिक श्रमिकों के रूप में नये वर्ग का उदय हुआ,
  - लोग कृषि व कुटीर उद्योगों को छोड़कर बड़े उद्योगों में मजदूरी करने लगे।
  - नये नये शहरों का विकास होने लगा किन्तु इस व्यवस्था में श्रमिकों का शोषण बड़े पैमाने पर हो रहा था।

  निष्कर्ष
  - इस प्रकार यूरोप में होने वाले सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक व आर्थिक बदलावों ने एक ऐसे विषय की आवश्यकता को उत्पन्न किया जो सामाजिक व्यवस्था का वैज्ञानिक तरीके से अध्ययन कर सके
  - अतः सन् 1838 में फ्रांसीसी दार्शनिक आगस्ट काम्टे (Auguste Comte) ने एक विषय के रूप में समाजशास्त्र की शुरूआत की।
  - उन्होंने पहले इसे सामाजिक भौतिकी (Social Physics) नाम दिया जिसे बाद में समाजशास्त्र (Sociology) कर दिया।

भारत में समाजशास्त्र का विकास

- भारत में समाजशास्त्र की एक विषय के रूप में देर से शुरूआत हुई।
- किन्तु सामाजिक जीवन के विषय में अध्ययन प्राचीन काल से ही होता रहा है।
- 'रामायण' व 'महाभारत' जैसे ग्रन्थ, कौटिल्य का 'अर्थशास्त्र' व मनु द्वारा लिखित 'मनुस्मृति' तथा ऐसे ही अनेक ग्रन्थों में हमें तात्कालिक सामाजिक व्यवस्था के विषय में पता चलता है
- किन्तु यह ग्रन्थ किसी विषय के परिप्रेक्ष्य को ध्यान में रखकर नहीं लिखे गये थे।
- यूरोप में समाजशास्त्र के उद्भव के प्रमुख कारण फ्रांसीसी क्रान्ति व औद्योगिक क्रान्ति माने जाते हैं
- भारत में समाजशास्त्र बहुत बाद में आया तथा उस समय भारत ब्रिटिश अधीनता में था
- इस कारण यहाँ प्रारम्भिक समाजशास्त्रीय अध्ययन अधिकांशतः यूरोपियन विद्वानों द्वारा किये गये।
- भारत में समाजशास्त्र की वास्तविक शुरूआत **बम्बई विश्वविद्यालय से** मानी जाती है। जहाँ सन् **1919 में पैट्रिक गेडिस** की अध्यक्षता में समाजशास्त्र विभाग की शुरूआत हुई
- हालांकि ऐच्छिक विषय के रूप में यह सन् 1914 से पढ़ाया जाने लगा था।

- इसी तरह **1917 में ऐच्छिक विषय के रूप** में कलकत्ता विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र की शुरूआत हुई।
- **1921 में लखनऊ विश्वविद्यालय** में समाजशास्त्र की शुरूआत हुई
- **1923 में आन्ध्र व मैसूर विश्वविद्यालयों** में भी इसकी शुरूआत हुई।
- 1952 में **'Indian Sociological Society'** की स्थापना की गई। जिससे सभी समाजशास्त्रियों को जुड़ने का आधार मिला।
- प्रारम्भ में समाजशास्त्र को अन्य विषयों के साथ पढ़ाया जाता था। जिनमें **मानवशास्त्र एवं अर्थशास्त्र** प्रमुख थे।
- **'टाटा इन्स्टीट्यूट ऑफ सोशल वर्क** लखनऊ तथा **'इन्स्टीट्यूट ऑफ सोशल साईन्स'** आगरा जैसे अनुसंधान केन्द्रों की भी स्थापना हुई, जहाँ **समाजशास्त्रीय अनुसंधान** होने लगे।
- **भारत के प्रमुख समाजशास्त्रियों में से कुछ निम्न है**-
  - एस.सी. दूबे,
  - एम.एन. श्रीनिवास - संस्कृतिकरण' 'पश्चिमीकरण' व 'प्रभुत्व जाति' की अवधारणा
  - ए.के. सरन,
  - डी.एन. मजुमदार,
  - जी.एस. घुरिये,
  - के.एम. कपाड़िया,
  - पी.एच. प्रभु,
  - ए.आर. देसाई,
  - इरावती कर्वे,
  - राधाकमल मुकर्जी
  - योगेन्द्र सिंह इत्यादि।

भारतीय समाजशास्त्री

गोविन्द सदाशिव घुर्ये (1893-1983)

- गोविन्द सदाशिव घुर्ये का बौद्धिक एवं अकादमिक क्षेत्र में बड़ा नाम है।
- इन्हें भारतीय समाजशास्त्र का जनक कहा जाता है।
- इन्होंने न केवल भारत में समाजशास्त्र को स्थापित किया वरन् ऐसे छात्रों को भी तैयार किया जिन्होंने देश में समाजशास्त्र के समाजशास्त्रीय शोध तथा सिद्धान्तों के द्वारा भारतीय समाजशास्त्र को मजबूती प्रदान की।

घुर्ये की प्रमुख कृतियां	घुर्ये का योगदान
• कास्ट एण्ड रेस इन इण्डिया 1932 • सेक्स हेबिट्स ऑफ मिडिल क्लास पिपल 1938 • दि एबओरिजनल्स सो-काल्ड एण्ड दियर फ्यूचर • कल्चर एण्ड सोसायटी 1945 • आफ्टर ए सेन्चुरी एण्ड ए क्वार्टर 1960 • कास्ट क्लास एण्ड ओक्युपेशन 1961 • फैमिली एण्ड किन इन इण्डो यूरोपियन कल्चर 1962 • सिटीज एण्ड सिविलाइजेशन 1962 • दि शिड्युल्ड ट्राइब्ज 1963 • दि महादेव कोलिज 1963 • एनोटोमो ऑफ ए रूरल कम्युनिटी 1963 • विदर इण्डिया 1974 • इण्डिया रिक्रियेट्स डेमोक्रेसी 1978 • वैदिक इण्डिया 1979	• भारतीय संस्कृति तथा सभ्यता। • प्रजाति। • धर्म। • जाति एवं नातेदारी व्यवस्था। • आदिवासी अध्ययन। • ग्रामीण नगरीकरण। • भारतीय साधु। • सामाजिक तनाव। • भारतीय वेशभूषा

डी. पी. मुकर्जी (1894- 1961)

डी.पी. मुकर्जी की प्रमुख कृतियाँ	डी.पी. मुकर्जी का प्रमुख योगदान
• व्यक्तित्व और सामाजिक विज्ञान। • समाजशास्त्र की मूल अवधारणाएं • आधुनिक भारतीय संस्कृति। • भारतीय युवकों की समस्याएं। • टैगोर एक अध्ययन। • भारतीय संगीत का परिचय • भारतीय इतिहास पर एक अध्ययन • विचार एवं प्रतिविचार 1946 • विविधताएं 1958	• व्यक्तित्व। • आधुनिक भारतीय संस्कृति । • परम्पराएं। • समाजशास्त्र की प्रकृति तथा पद्धति • नये मध्यम वर्ग की भूमिका। • भारतीय इतिहास की रचना। • आधुनिकीकरण। • संगीत।

ए.आर. देसाई (1915-1994)

- अक्षय कुमार रमनलाल देसाई का जन्म 16 अप्रेल 1915 में गुजरात में नाड़ियाद कस्बे में हुआ था।

ए.आर.देसाई की कृतियाँ	ए.आर.देसाई का योगदान
• सोशयल बैकग्राउण्ड ऑफ इंडियन नेशनलिज्म 1946 • रिसेन्ट ट्रेन्ड्स इन इंडियन नेशनलिज्म 1960 • रूरल सोश्लोजी इन इंडियन 1969 • स्लम्स एण्ड अरबेनाइजेशन (डि.पिल्लई के साथ)1970 • स्टेट एण्ड सोसाइटी इन इंडिया 1975 • पीजेन्ट् स्ट्रगल इन इंडिया 1979 • इंडियाज पाथ ऑफ डेवलपमेंट 1984 • अग्रेरियन स्ट्रगल्स इन इंडिया आफ्टर इंडिपेन्डेंस 1986	• भारत में ग्राम। • भारतीय समाज का रूपान्तरण • भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि। • किसान संघर्ष • राज्य और समाज • गंदी बस्तियाँ और नगरीकरण • राष्ट्रीय आन्दोलन

एम.एन श्रीनिवास (1916-1999)

- मैसूर नरसिम्हाचार श्रीनिवास का जन्म 16 नवम्बर 1916 मैसूर के एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था।
- उनकी दीक्षा ब्राह्मण परम्पराओं-ब्राह्मणत्व के प्रशिक्षण में हुई थी।
- उन्होंने घुर्ये के सान्निध्य में एम.ए. किया।
- उन्होंने एम.ए. के शोध प्रबंध में "मैसूर में विवाह और परिवार" को अपने अध्ययन का विषय बनाया।
- उन्होंने मुम्बई विश्वविद्यालय में ही "दक्षिण भारत के कुर्ग लोगों" के विषय पर डाक्टरेट की उपाधि प्राप्त की।
- इसी विषय पर आपने अपनी पुस्तक-रिलिजन एण्ड सोसाइटी अमांग दि कुर्ग ऑफ साउथ इंडिया का प्रकाशन 1952 में करवाया। यह पुस्तक काफी लोकप्रिय हुई।

• एम.एन. श्रीनिवास की कृतियां	• एम. एन. श्रीनिवास का योगदान
○ मैसूर में विवाह और परिवार 1942 ○ दक्षिण भारत के कुर्ग में धर्म व समाज 1952 ○ भारतीय गांव 1955 ○ आधुनिक भारत में जाति और अन्य लेख 1962 ○ आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन 1966 ○ दि रिमेम्बर्ड विलेज 1976 ○ भारत : सामाजिक संरचना 1980 ○ प्रभु जाति और अन्य लेख 1987 ○ दि कोहिजिवे रोल ऑफ संस्कृताईजेशन 1989	○ सामाजिक परिवर्तन : संस्कृतिकरण, पश्चिमीकरण, ब्राह्मणीकरण ○ धर्म और समाज ○ गांव ○ जाति ○ प्रभु जाति ○ आधुनिक भारत ○ विवाह और परिवार